रहीम–रसखान की परम्परा के वाहक, भारतीय संस्कृति के उपासक श्री दीन मुहम्मद 'दीन

Yogesh Kumar1, Rekha Singh[2], Renu Chaudhary[3]

[1]Assistant Professor, Department of Hindi, R D College, Ole, Mathura, Uttar Pradesh

[2] Guest Lecturer, Department of Sanskrit, Hans Raj College, Delhi University

[3]Research Scholar , Department of Hindi, Agra University

***Corresponding Author:** Rekha Singh, Guest Lecturer, Delhi University

E-mail: aadesh.singh84@gmail.com

ABSTRACT

'दीन मुहम्मद' 'दीन' को जहाँ जन्म से इस्लामी संज्ञा से विभूषित होने का संयोग मिला है वहीं वे राम–रहीम के एकता वादी स्वरों के गायक ही नहीं आदर्श नायक भी हैं। उनकी वाणी वह स्वर गा रही है जो वेद की ऋचा का स्वर है। वह, वह स्वर है जो उपनिषदों, दर्शनों से सीधा तो नहीं आया, परन्तु उसी जमीन से फूटकर निकला हुआ स्वर है। वह, वह स्वर है जो रामायण, महाभारत और गीता की धरती का सहज स्वर है। दीन मुहम्मद 'दीन' ने स्वयं की कलम से भी यह लिखा है कि 'भारतीय मुसलमान कहने में मुझे बड़ा गर्व है। संसार के अन्य इस्लाम धर्म को मानने वाले देशों की तुलना में मेरे देश भारत के मुसलमान भिन्न हैं और उन्हें भिन्न होना भी चाहिये। दीन जी कहते हैं कि मैं अपने देश को प्रेम सौहार्द से भरा हुआ देखना चाहता हूँ कि अपना पूर्ववत विशाल भारत देख सकूँ। मुझे इसके कण–कण से प्यार हे, तिनके–तिनके से दुलार है। जिस देश की धारा पर मैं जन्मा हूँ उसका अपार ऋण मेरे ऊपर है। अपने प्राण देकर भी में उससे उऋण नहीं हो सकता हूँ।

Key words: इस्लामी संज्ञा, उपनिषदें, पुर्नस्थापना, राष्ट्रभाषा, साहित्यकार, धर्मान्ध

Access this article online	
Quick Response Code:	www.oijms.org.in

मैंने सदैव अपनी इस मातृभूमि के गीत गाये हैं।[1] मेरी दृष्टि में हम सभी एक पिता की सन्तानें हैं,[2] भाई–भाई हैं। फिर विद्वेष कैसा? अपने घर के बँटवारे की बातें कैसी? अपने भाईयों के रक्त बहाने की जिद कैसी? देश के टुकड़े–टुकड़े करने का सपना क्यों? ऐसे अनेक प्रश्न हैं जो अनुतरित हैं।[3] दीन का चिंतन राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना, भाईचारा, विश्व बन्धुत्व की भावना व भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को आत्मसात करने का है। दीन मुहम्मद का सम्पूर्ण साहित्य ही उन्हें प्रखर राष्ट्रीय चिंतना का साहित्यकार सिद्ध करता है। वे उदारवादी दृष्टिकोण के, सर्वधर्म समभाव के चिंतक–मनीषी हैं। वे प्रखर राष्ट्र–भक्त, राम–कृष्ण के उपासक भी दिखते हैं। जबकि वे जन्म से मुसलमान हैं। उनकी दृष्टि में राम–रहीम–ईश्वर– अल्हा–ईसा–मूसा–नानक–महावीर सब एक ही शक्ति के नाम हैं जो अलग–अलग देश काल में अलग–अलग भाषा–भाषी लोगों ने अपने मतानुसार रखे हुये हैं। वे हिन्दी या उर्दू को हिन्दू या मुसलमानों की अलग–अलग भाषा स्वीकार करने को बिल्कुल भी तैयार नहीं हैं। वे दोनों ही भाषाओं को भारतियों की भाषा मानते हैं लेकिन राष्ट्रीय एकता के लिये वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रबल हिमायती बनकर सामने आते हैं। यथा–

'हम हिन्दी पर कुर्बान हुए, हम हिन्दुस्तानी मुसलमान।

भाषा से धर्म नहीं जोड़ा हो भले अलग अपनी जुवान।।
साहित्य गवाही देता है, हमनें हिन्दी से प्यार किया।
हम मुस्लिम साहित्यकारों ने, बेहद हिन्दी का श्रृंगार किया।।
हिन्दी अपनी ही जननी है, ऐसा मोमिन का सोच रहा।
इसलिये हमें अपनाने में, मन में न कभी संकोच रहा।।[4]

दीन मुहम्मद का सम्पूर्ण काव्य अनेक प्रखर राष्ट्रवादी–देशभक्त भारतीय संस्कृति के उपासक प्रवल श्री राम भक्त होने के उद्धरणों से भरा पड़ा है। वे अपना परिचय कुछ इस प्रकार देते हैं–

'पूछ रहे हो परिचय मेरा, मैं तुमको बतलाऊँ।
भारत का रहने वाला हूँ, भारतीय कहलाऊँ।
पुण्य–भूमि भारत माता का मैं हूँ लाल दुलारा।
बहती जिसमें गंगा–जमुना वह प्रदेश हमारा।।5

इसी भव इसी पृष्ठ भूमि से परिचय एक महान साहित्यकार अबा फैयाज साहब गवालियरी ने भी दिया था वे अपने परिचय में लिखते हैं। कि –

जमुना मेरी रग में है, तो गंगा है लहू मैं,
मालूम है मैं कौन सी मिट्टी से बना हूँ।

ऐसे प्रखर राष्ट्र प्रेमी भारतीयता के उपासक फैयाज साहब को भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ0 जाकिर हुसैन ने 'शायरे वतन' के खिताब से नवाजा और तत्कालीन शंकराचार्य ने उन्हें संस्कृत में लिखकर 'धर्म शिरोमणि' की उपाधि से विभूषित किया था। उसी परम्परा के कवि दीन मुहम्मद 'दीन' हैं। ऐसे ही मुसलमान साहित्यकारों में, भारतीयता के उपासक, श्री राम–कृष्ण भक्त कवियों की श्रृंखला में रहीम–रसखान–कबीर–जायसी–ताज–दीन मुहम्मद 'दीन' आते हैं।[6] जिनके सम्बन्ध में हिन्दी के उन्नायक व अपने युग के प्रतिनिधि कवि भारतेन्दु 'हरिश्चन्द्र' जी ने कहा था कि –

''इन मुसलमान हरि जनन पर कोटिस हिन्दु वारिये'' ऐसा उन्होंने बहुत ही सोच समझकर कहा था। रहीम, रसखान, कबीर ने अपने समय में समाज में बैर भाव व ईर्ष्या को हर स्तर पर हतोत्साहित किया। भाईचारा राष्ट्रीय एकता, सर्वधर्म समभाव, विश्व कल्याण, मानस धर्म की स्थापना का हर सम्भव प्रयत्न किया। समाज में फैले हुए अनाचार कुरीतियों, पाखण्डों का बिना लाग लपेट के प्रतिकार किया। जन–मानस के सामने एक स्पष्ट दृष्टिकोण व कल्याण हेतु मार्ग दर्शन किया। यह सभी साहित्यकार होने से भी पहले सच्चे समाज सुधारक, धर्म सुधारक एवं वास्तविक मानवता एवं धर्म के नाम पर कभी न झगड़ने का उपदेश करने वाले सच्चे देशभक्त रहे हैं। इन सभी ने हमें यह सीख दी है कि– ''मजहब़ नहीं सिखाता हमें आपस में बैर रखना'' धर्म के नाम पर या जाति के ना मपर तो सदैव राजनीति ने या झूठे पाखण्डी–धर्मान्धों ने जनता को लड़बाया है, ताकि उनके तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति हो सके। दीन जी लिखते हैं कि–

'न हिन्दू में न मुस्लिम में कहीं तकरार होती है।
सदा उनके दिलों में प्यार की बौछार होती है।
कब धर्म के पाखण्डियों ने प्रेम से रहने दिया–
लड़ें वे किस तरह साजिश यहाँ तैयार होती है।।'[7]

दीन जी का मानना है कि –

'न मंदिर में न मस्जिद में खुदा का बास होता है
वहाँ पर साधकों की साधना आवास होता है।
अब इन इबादत के मज़ों के नाम पर लड़िये नहीं–
क्योंकि मन मन्दिरों में ही खुदा का बास होता है।''[8]

वे हिन्दू–हिन्दुस्तान की, करते करते बात।
छोटे इतने हो गये, राही न कुछ औकात।।[9]

वे सभी धर्मावलम्बियों को, हिन्दू एवं मुसलमानों के एक साथ ललकारते हैं। वे कहते हैं कि –

'देश में बसे विभिन्न धर्माबलम्बियों आज कुछ प्रश्नों के जबाब हमें चाहिये।
पहले देश है कि धर्म है तुम्हारा पहले, बूँद–बूँद रक्त का हिसाब हमें चाहिये।

धर्म राजनीति से जो जोड़ते हैं धर्मधारी, उस धर्म का नहीं हमें शबाब चाहिये।
शान्ति–सद्भाव–एकता को जन्म दे सकें जो, ऐसे शुचि धर्म का ही ख्वाब हमें चाहिए।।[10]

साहित्यकार राम रहीम के बीच भेद को झूठा मानता है। वे राम रहीम, गौतम या नानक, ईसा या मूसा में भेद मानने को भूल से भी तैयार नहीं हैं। जैसे–

'राम ही रहमान है, कुरान में भी राम ही है।
राम की महानता के पंख यों न छाँटिये।।'[11]

वे मानवता की बात करते हैं। मानव धर्म की शिक्षा देते हैं–

'मानवता का धर्म ही, बहुत बड़ा है धर्म।
चलते इस पर ही रहो, यही पुण्य सत्कर्म।।'[12]

वे सभी को स्पष्ट संदेश देते हुये राष्ट्र प्रेम की बात करते हैं यथा–

'मुसलमान, सिख, हिन्दुओं सुन लो यह संदेश।
धर्म सभी हैं बाद में, पहले अपना देश।।'[13]

रसखान की भाँति ही वे भी राम को अपना आराध्य भी स्वीकारते हैं। रसखान ने कहा था–

मानुष हों तो वही रसखान बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हों तो कहा बसु मेरो चरों नित नंद की धेनु मझारन।
जो खग हों तो बसेरो करौं मिलि कालिन्दी कूल कदंब की डारन।।

दीन जी कहते हैं–

'मेरे वे ही राम है और नहीं है कोय।
घट–घट में जो राम रहें, सांस–सांस में सोय।।

इन सभी तथ्यों के आलोक में दीन के चिंतन को देखते हुए स्पष्ट है कि वे रहीम–रसखान–कबीर–एमरीडी रिन्को, कामिल बुल्के की परम्परा के ध्वज वाहक भारतीय संस्कृति के वह पोषक व उपासक है। इसीलिये मुक्तक सम्राट–लखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र ने दीन के सम्बन्ध में लिखा है कि –

'दीन मुहम्मद 'दीन' हैं हिन्दी में रसलीन।
ब्रज में ज्यों रसखान हैं त्यों हिन्दी में दीन।
त्यों हिन्दी में दीन हुए हुलसी के तुलसी।
होकर काव्य प्रवीण, हरी की बगिया झुलसी।
रहे एकता के स्वर 'गाते, फूंके प्राण नवीन।
हिन्दी की दुन्दुम्भी बजाते, दीन मुहम्मद दीन।।'[14]

वर्तमान 'हिन्दी साहित्य संस्थान, लखनऊ' के कार्यकारी अध्यक्ष श्री उदयप्रताप जी के शब्दों में दीन जी ने ''जाति धर्म की सीमाओं की कभी चिंता नहीं की और रसखान, कबीर, रहीम की तरह मुसलमान होते हुए भी राम के प्रति तुलसी जैसी सहज भक्ति और राम के प्रति निष्ठा के छन्द लिखे हैं। यह काम कठिन नहीं तो सहज भी नहीं है।' ऐसे ही चरित्र के साहित्यकारों की आज राष्ट्र को अति आवश्यकता भी है।[15]

ISSN: 2454-2385 (Online Version)

संदर्भ संकेत

1. डा0 दीन मुहम्मद 'दीन' – 'एकता के स्वर', (अभिमत से)
2. डा0 दीन मुहम्मद 'दीन' – 'एकता के स्वर', (अभिमत से) मानस संगम,शिवाला,कानपुर, 2005
3. डा0 दीन मुहम्मद 'दीन' – 'एकता के स्वर', (निवेदन से)
4. 'छपते–छपते' दीपावली विशेषांक – 26–सी, कलकत्ता से (700014), पृष्ठ–283
5. डॉ0 दीन मुहम्मद 'दीन' – 'जय जय स्वदेश', पृष्ठ–69, मानस संगम,शिवाला,कानपुर , 1989
6. डॉ0 दीन मुहम्मद 'दीन' – 'हुलसी के तुलसी', पृष्ठ–ठ (दो शब्द से) मानस संगम,शिवाला,कानपुर 1985
7. डॉ0 दीन मुहम्मद 'दीन' – 'जय जय स्वदेश', पृष्ठ–30
8. डॉ0 दीन मुहम्मद 'दीन' – 'जय जय स्वदेश', पृष्ठ–30
9. डॉ0 दीन मुहम्मद 'दीन' – 'दीन के दोहे' (अप्रकाशित) – पृष्ठ–27
10. डॉ0 बद्रीनारायण तिवारी – 'राष्ट्रीय एकता संगम', पृष्ठ 6, सहर प्रकाशन,नीमच ।
11. डॉ0 दीन मुहम्मद 'दीन' – 'एकता के स्वर' – पृष्ठ–27
12. डॉ0 दीन मुहम्मद 'दीन' – 'दीन के दोहे', अप्रकाशित, पान्डुलिपि से, पृ–29
13. डॉ0 दीन मुहम्मद 'दीन' – 'दीन के दोहे', अप्रकाशित, पान्डुलिपि से, पृ–48
14. डॉ0 दीन मुहम्मद 'दीन' – 'जय जय स्वदेश' – (XII)
15. डॉ0 दीन मुहम्मद 'दीन' – 'जय जय स्वदेश' – (XVI)